International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 10 Issue 8 Ser. III || August 2021 || PP 44-46

ब्रिटिश उपयोगितावादी इतिहास लेखन का भारत पर प्रभाव

डॉ0 संजय कुमार सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग
एम0एम0एच0 कॉलेज, गाजियाबाद
(उत्तर प्रदेश)।

विरेन्द्र कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग
राजकीय महाविद्यालय, टप्पल, अलीगढ़ (उ0प्र0)
ईमेल–kumarviren1986@gmail.com

सारांश

ब्रिटिश इतिहासकारों ने भारत के बारे में अपने विभिन्न दृष्टिकोणो का प्रयोग करते हुए इसके इतिहास की अलग–अलग व्याख्या की। जहाँ इन इतिहासकारों ने भारत के स्वर्णिम अतीत के साथ छेड़–छाड़ की वहीं इन इतिहासकारों के एक समूह ने भारत के इतिहास का अध्ययन कर बहुत सारी पद्धतियों को पुर्नस्थापित किया। ब्रिटिश इतिहास लेखन की उपयोगितावादी धारा ने जिसका प्रतिपादक जेरोमी बैंथम था, बैंथम ने इस सिद्धांत को सुव्यवस्थित रूप दिया जो शीघ्र ही न ब्रिटेन का बल्कि समूचीय यूरोप का राजनैतिक दर्शन बन गया।

इसमें सन्देह नहीं कि जहाँ ब्रिटिश प्राच्यवादियों ने बौद्धिक क्षेत्र में कुछ जागरण किया, वहां ब्रिटिश उपयोगितावादियों ने 19वीं शताब्दी में भारतीय जनमानस को विभिन्न क्षेत्रों में प्रभावित किया। भारत में मैकाले, टामस मुनरो, एलफिन्स्टन, मैटकाफ तथा विलियम बैंटिक ने इस दिशा में कार्य किये ब्रिटिश इतिहासकार गोवान्नी कोसटीगन ने लिखा है कि, लार्ड बैंटिक तथा लार्ड मैकाले के माध्यम से बैंथम के विचार ईस्ट इंडिया कम्पनी बंगाल में गये जिससे महान उपमहाद्वीप में लाखों हिन्दुओं तथा मुसलमानों का जीवन प्रभावित हुआ।

उपयोगितावादी विचारकों ने भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अपना प्रभाव स्थापित किया। सामाजिक दृष्टि से ब्रिटिश अधिकारियों ने भारत में प्रचलित अनेक सामाजिक बुराईयों को दूर करने में रूचि ली। पर यह महत्त्वपूर्ण है कि ईस्ट इंडिया कम्पनी अपने व्यापारिक हितों को ध्यान में ये परिवर्तन बड़ी धीमी तथा सहज रूप से चाहते थे। लार्ड विलियम बैंटिक ने इसमें रूचि ली। वस्तुतः जब विलियम बैंटिक इंग्लैण्ड में भारत के गवर्नर जनरल के रूप में नियुक्त हुआ, तब उसे बैंथम के ग्रन्थों का एक सेट भेंट किया गया था। भारत आते हुए उसने जेम्स मिल को आश्वासन दिया था कि बैंथमवाद भारत में उसके शासन में मार्गदर्शक होगा।

लार्ड विलियम बैंटिक ने भारत में प्रचलित अनेक सामाजिक कुरीतियों की ओर ध्यान दिया। उसने सती प्रथा रोकेने के लिए एक कानून 29 दिसम्बर 1829 ई. को बनाया। इसके पीछे उसका उपयोगितावादी दृष्टिकोण ही प्रमुख रूप से था। इसी भांति गुलामी प्रथा को रोकने के लिए पहले ही मानववादी तथा उपयोगितावादियों ने प्रयत्न कर इसका उन्मूलन किया गया। बाद में 1832 ई. के रेग्यूलेशन तीन तथा 1833 ई0 के नियम के द्वारा कानूनी रूप से इसका उन्मूलन किया, परन्तु यह महत्त्वपूर्ण है कि भारत में गुलामी प्रथा इतने वीभत्स रूप में न थी जितने यूरोप में। इसी भांति बाल विवाह, बहु विवाह के विरोध तथा पुनः विधवा विवाह के प्रयत्नों में उपयोगितावादियों का महत्त्वपूर्ण स्थान था।

शिक्षा के क्षेत्र में उपयोगितावादी विचारकों का सर्वाधिक प्रभाव रहा। जेम्स मिल, लार्ड मैकाले, लार्ड विलियम बैंटिक, चार्ल्स ट्रेविलियन ने अपने विचारों से शिक्षा नीति मेंपरिवर्तन किये थे। ब्रिटिश पार्लियामेन्टरी दस्तावेजों से ज्ञात होता है कि जेम्स मिल ने भारत की शिक्षा नीति में रूचि लेना प्रारम्भ किया जिसका आधार इसकी उपयोगिता था। 1820 ई0 से शिक्षा के माध्यम की विस्तृत चर्चा होने लगी थी। कहा गया था कि शिक्षा का माध्यम तर्कपूर्ण, उन्नतिशील तथा वैज्ञानिक हो। जेम्स मिल ने दो प्रकार से भारत की शिक्षा नीति को प्रभावित किया। ईस्ट इंडिया के डायरेक्टर्स द्वारा भारत को भेजे गये पत्र व्यवहारों से तथा दूसरे भारत के अनेक प्रशासनिक अधिकारियों को प्रभावित करके। जान स्टुअर्ट ने अपने पिता जेम्स मिल के बारे में लिखा कि सभी उच्च अधिकारी उसकी राय को महत्त्व देते थे, उसकी प्रतिभा से प्रभावित थे तथा उसकी सलाह को आदर देते थे। परन्तु जेम्स मिल का विचार था कि भारत में पाश्चात्य शिक्षा, उत्तम तथा निपुण शासन के अभाव में तुरन्त लाभकारी न होगी। इसी भांति वह भारत में अंग्रेजी माध्यम की बजाय वर्नाकुलर भाषाओं में शिक्षा देने के पक्ष में था। इस सन्दर्भ में जेम्स मिल तथा लार्ड मैकाले में गहरा मतभेद था। विलियम बैंटिक ने जेम्स मिल के विचारों को स्वीकार न किया था। लार्ड मैकाले ने जैसा कि पूर्व में बताया गया है कि शिक्षा की सम्पूर्ण दिशा को बदलने में क्रांतिकारी भूमिका निभाई। शिक्षा समिति में प्राच्यवादियों के समान प्रभाव की चिंता न करके उसने शिक्षा की टिप्पणी (Minutes) घोषित की तथा अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बना दिया। प्राच्यवादी प्रिंसेप ने अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देने को धन की बर्बादी कहा। वस्तुतः मैकाले की शिक्षा नीति केवल शिक्षा तक सीमित न थी बल्कि धार्मिक विघटन, सांस्कृतिक ह्रास तथा आर्थिक शोषण भी था। अंग्रेजियत का विस्तार, संस्कृत की उपेक्षा तथा इसके साहित्य की हानि तथा भारतीयों में हीन भावना पैदा करना भी था। प्रथम,न्याय तथा कानून के क्षेत्र में उपयोगितावादी इतिहासकारों की प्रभावी भूमिका रही। जेम्स मिल ने भारत के बारे में अपने न्याय सम्बन्धी विचारों को पत्र–व्यवहार द्वारा प्रकट किये थे। भारतीय कानूनों में एकरूपता न थी। मुस्लिम फौजदारी नियम हिन्दुओं पर भी लागू होते थे। बैंथम का कानूनी दर्शन उपयोगितावादी सिद्धांतों पर भी लागू होते थे। बैंथम का कानूनी दर्शन उपयोगितावादी सिद्धांतों पर आधारित था। उसने स्वयं इंग्लैण्ड में अनेक नागरिक तथा फौजदारी कानूनों में सुधार करने की प्रेरणा दी थी। जेम्स मिल

ने भी कानून की एकरूपता पर बल दिया था। 1832 की सलैक्ट कमेटी में उसने बैंथम के न्याय सम्बन्धी सिद्धांतों के आधार पर विचार करने को कहा था। भारत में कानून व्यवस्था की कमियों की ओर भी ध्यान आकृष्ट कराया था। अपील सम्बन्धी सुविधा का अभाव, कानून संहिताबद्ध न होना आदि अनेक कमियां थी। हिन्दूस्मृतियों के आधार पर तथा मुसलमान कुरान के आधार पर निर्णय लेते थे। मिल भारतीय न्याय ग्रन्थों से बड़ा क्षुब्ध था। उसने 1820 ई0 में इनके बारे में लिखा–

''एक अव्यवस्थित, ढ़ीले–ढ़ाले, अस्पष्ट, मूर्खता या अज्ञानी उद्धरणों या कहावतों का कानून की पुस्तकों, भक्ति की पुस्तकों तथा काव्य की पुस्तकों का मनमाने ढंग से एकत्रित संग्रह, साथ में एक टीका जो बेहूदापन तथा अंधकारमय हो कि एक बेहतरीन मिश्रण, जिसमें न कुछ भी परिभाषित ही है और न ही स्थापित।

अतः लार्ड मैकाले ने इंडियन पैनल कोड बनाकर एक महत्त्वपूर्ण कार्य अवश्य किया। मैकाले के कानून के क्षेत्र में उपयोगितावादी विचारों को व्यवहारिक रूप देने से अनेक इतिहासकारों ने उसकी प्रशंसा की। परसिवल ग्रिफिथ ने लिखा, ''न्यायिक सेवाओं का विकास, साथ में संहिताबद्ध कानून की महान प्रगति ने न्यायालयों में विश्वास बनाया, जो तमाम आधुनिक, राजनैतिक परिवर्तनों में विद्यमान रहे तथा भारतीय स्वतन्त्रता के मजबूत लंगर हैं।"

19वीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में बैंथम से प्रेरणा लेकर भारत में अनेक सुधार किये। एलीफिन्सटन ने कुछ नई जेलों का निर्माण बैंथम की आदर्श जेलों (Panoptican) के अनुसार किया। लार्ड विलियम बैंटिक ने मुल्तान, रावलपिण्डी तथा अम्बाला में इसी प्रकार की जेलें बनवाई, जहां कैदियों के प्रति उदार दृष्टिकोण अपनाया गया।

आर्थिक क्षेत्र में भी ब्रिटिश इतिहासकारों का यथेष्ट प्रभाव दिखलाई देता है। वे प्रायः लार्ड कार्नवालिस के भूमि के स्थायी प्रबन्ध के विरोधी थे तथा सामान्य व्यापार में एकाधिकार भी नहीं चाहते थे। वह कम्पनी का एकाधिकार नहीं चाहते थे बल्कि स्वतन्त्र व्यापार के हामी थे।

बैथम ने आर्थिक मामलों में एडम स्मिथ का समर्थन किया था। जेम्स ने भी ''हिस्ट्री आफ ब्रिटिश इंडिया'' में कम्पनी के एकाधिकार की आलोचना की थी। उसने कम्पनी की आर्थिक लूट और रिश्वत को बढ़ावा देने वाला बताया था। वह एकाधिकार को जनहित में न मानता था रिकार्डों की रैंट थ्योरी का उपयोग करते हुए उसने भारत में रैयतवाडी प्रथा का समर्थन किया था। प्रसिद्ध लेखक ऐरिक स्टोक्स तथा प्रो0 एस0पी0 गुप्ता का मत है कि 1822 ई0 का सातवां रेग्यूलेशन जेम्स मिल के प्रभाव का ही परिणाम थे। जेम्स मिल को लगता था कि रैयतवाडी व्यवस्था लागू होने से असमानता कम होगी।

जेम्स के आर्थिक विचारों से भारत में अनेक ब्रिटेन अधिकारी उसके विचारों से प्रभावित थे। मद्रास के गवर्नर टामस मुनरो ने कार्नवालिस की जमींदारी प्रथा की आलोचना कीथी तथा मद्रास में रैयतवाडी प्रथा चालू करने में सहयोग दिया था। जान स्टुअर्ट मिल ने भी अपने विचारों से भारतीय समाज को प्रभावित किया था। उसने अपनी पुस्तक 'पालिटिकल इकोनोमी' में मजदूरी, पूंजी, मुद्रा, कीमत, सूद, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार आदि विषयों पर उसके विचारों ने भारत में ब्रिटिश प्रशासकों को प्रभावित किया था। जे0एस0 मिल ने अपने सभी लेखों में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता तथा सार्वजनिक योजनाओं में लोक कल्याण की बात कही। अतः उपयोगितावादी इतिहासकारों ने व्यापार, उद्योग, कृषि के क्षेत्र में एक नया दृष्टिकोण दिया। स्वतन्त्र व्यापार, खुली प्रतियोगिता, भूमि व्यवस्था में सुधार आदि में परिवर्तन की ओर प्रेरित किया।

राजनैतिक दृष्टि से उपयोगितावादी इतिहासकारों का दृष्टिकोण साम्राज्यवादी था।भारत तथा इंग्लैण्ड के प्रति उनके मापदण्ड दोहरे थे। जेम्स मिल तथा लार्ड मैकाले दोनों ब्रिटिशसाम्राज्य के पोषक थे। जेम्स मिल चाहता था 'अच्छी सरकार' न कि भारत की स्वशासितसरकार जान स्टुअर्ट मिल ने भारत में ईस्ट इंडिया कम्पनी का शासन बना रहे इसके लिएब्रिटिश पार्लियामेन्ट के सम्मुख एक लम्बी पैटीशन रखी थी जो स्वीकार न की गयी। उसनेराजनैतिक विचार केवल ब्रिटिश हितों, वहां के लोगों की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता तक सीमित थे।

लार्ड मैकाले भी इसमें पीछे न था। इस क्षेत्र में सभी उपयोगितावादी इतिहासकार तथा लेखकअधिकतम लोगों को अधिकतम सुखों के सिद्धांत को भूलगये थे।

धार्मिक दृष्टि से बैंथम धार्मिक प्रश्नों पर मौन रहता था। जेम्स मिल का पालन पोषण प्रेसीबीटेरियन्स ईसाई मत में हुआ था तो उच्च शिक्षा भी इसी के माध्यम से हुई। वह ईसाई धर्म को मानता था परन्तु सार्वजनिक क्षेत्र में धर्म के प्रति उदासीन था। उन्होंने भारत के मामले में भी कोई रूचि न दिखलाई थी तथा तटस्थता की नीति अपनाई थी। जान स्टुअर्ट मिल ने धर्म के मामले में नैतिकता को बल दिया था। लार्ड मैकाले ने भी प्रत्यक्ष रूप से भारत में कोई भाग न लिया था, यद्यपि वह शिक्षा नीति के माध्यम से ईसाईयत को लाभ पहुंचा रहा था।

पत्रकारिता के क्षेत्र में बैंथम, जेम्स मिल तथा जान स्टुअर्ट मिल ने स्वतन्त्र पत्रकारिता को महत्त्व दिया था। इस बारे में ब्रिटिश शासन की नीति कठोर थी। उपयोगितावादियों ने भी इसमें रूचि दिखलाई। इसमें मैटकाफ का नाम उल्लेखनीय है, जिसने 1835 ई. में भारत में कार्यकारी गवर्नर जनरल के प्रेस को बंधनों से मुक्ति दी तथा आलोचना को प्रोत्साहन दिया।

उपयोगितावादी ब्रिटिश इतिहासकारों के विभिन्न क्षेत्रों में विचारों तथा प्रत्यक्ष योगदानके बारे में तथा उसके प्रभावों के बारे में प्रसिद्ध इतिहासकार डा. ताराचन्द ने कहा है कि, बैंटिक, मैटकाफ और मैकाले तीनों बैंथम के अनुयायी थे और भारत को बहुत तेजी से बदलने को आतुर थे क्योंकि वे समझते थे कि भारत कुसंस्कार सहित तानाशाही के अन्तर्गत रहा है।

यह सही है कि उपयोगितावादी विचारकों ने भारत में आने वाले नवयुवक प्रशासकों को बड़ा प्रभावित किया। एलीफिंस्टन ने बँथम को अपने दौरों में पढ़ा, होल्ट मैकेंजें ने उपयोगिता को उच्च स्थान दिया तथा मैटकाफ स्वयं को एक उपयोगितावादी व्यक्ति की ही कल्पना करता था। बाद में विलियम बैंटिक निश्चय ही जेम्स मिल द्वारा उपयोगितावादी

विचारों से प्रभावित था। यह कहा जाता है कि वह बैथमवादी 'शुद्ध दूध' से पोषित था अपने अनेक क्रांतिकारी सुधारों के लिए उनसे प्रभावित हुआ। स्वयं मैकाले ने न्याय के क्षेत्र में बैंथम के सिद्धान्तों को लागू करने का प्रयत्न किया।

यह सही है कि ब्रिटिश उपयोगितावादी चिंतक तेजी से सुधार चाहते थे परन्तु भारत के सन्दर्भ में उनका दृष्टिकोण सकारात्मक कम था। वे भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता को घृणा की दृष्टि से देखते थे। वे हर कीमत पर ब्रिटिश प्रभुत्त्व को बनाया रखना चाहते थे। वे भारत में उपयोगितावादी सिद्धांत को एक नीति के रूप में अपनाने के पक्ष में थे। अतः उनका प्रभाव भारतीय जन–जीवन पर सीमित ही रहा। जे. मजीद ने इनका मूल्यांकन करते समय लिखा कि, उपयोगितावादियों को प्रायः स्वयं आत्मविश्वास न था जैसा कि उनके बारे में बताया जाता है कि उनका तत्कालीन भारत पर बड़ा सीमित प्रभाव था। सी0ऐ0 बायली ने माना है कि सुधार युग का ब्रिटिश भारत में सीमित प्रभाव था। उन्होंने भारतीय संस्थाओं ग्रामीण समुदाय तथा पंचायत को तहस–नहस किया, सम्भवतः उन्हें भारत में केवल एक संस्था की चिंता थी और वह थी ईस्ट इंडिया कम्पनी।

संदर्भ सूची

1. ब्रिटिश इतिहासकार तथा भारत, डॉ0 सतीश चन्द्र मित्तल।
2. इण्डियन हिस्ट्री, हिस्टोरियन्स एण्ड हिस्टोरियोग्राफी, डॉ0 कमल ए0 श्रीवास्तव।
3. क्लासिकल पॉलिटिकल इकोनोमी एण्ड ब्रिटिश रूल इन इण्डिया, एस0 अम्बराजन।
4. द ब्रिटिश पैरामाउण्टसी एण्ड इण्डियान रेनेसा, भाग–10, आर0सी0 मजूमदार।
5. मेकर्स ऑन मॉडर्न इंग्लैण्ड, गोवन्नी कोसटीगन।
6. द हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इण्डिया एण्ड यूटीलिटेरियन्स ऐज ए रिहोट्रिक मॉर्डन एशियन स्टडीज, जे0 मज़ीद।